ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 69-71

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

नारीवाद : विकास के विविध चरण

डॉ0 अमित कुमार

एसोसिएट प्रोफेसर– हिन्दी विभाग, जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पी0जी0 कालेज, बाराबंकी (उ0प्र0) भारत

Received-12.10.2023, Revised-18.10.2023, Accepted-23.10.2023 E-mail: amitkrj16@gmail.com

सारांशः ***दुनिया की आधी आबादी यॉनि 'स्त्रियों के साथ होने वाले भेदभाव, अन्याय और पितृसत्ता द्वारा किए जाने वाले दोयम दर्जे के व्यवहार को पहचानकर उनके खिलाफ संघर्ष करना व उन्हें पुरुषों के समान ही सभी तरह के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि अधिकार हासिल करने का प्रयास व संघर्ष' करना नारीवाद कहलाता है। 'नारीवाद' कोई रूढ़ और जड़ विचारधारा नहीं है, बल्कि एक गतिशील, परिवर्तनशील और विकसित विचारधारा है। – ''नारीवाद महिला उत्पीड़न के विभिन्न मुद्दों को समझने की दिशा में प्रयासरत एक गतिशील और निरन्तर परिवर्तित होने वाली विचारधारा है, जिनमें व्यक्तिगत, राजनीतिक और दार्शनिक पहल भी शामिल है, लेकिन जो एक विचार इन सभी नारीवादी दृष्टिकोणों में समान है ..... कि न्याय के लिए महिलाओं को स्वतंत्रता व समानता दी जानी आवश्यक है लेकिन कई दार्शनिक प्रश्नों पर इनके बीच गहरे मतभेद भी हैं, मसलन, स्वतंत्रता तथा समानता का स्वरूप कैसा हो..... मानव स्वभाव (विशेषकर महिलाओं के विषय में) का – निर्माण कैसे होता है, जिसे या तो सामाजिक, ऐतिहासिक परिस्थितियों की उपज माना जाता है या जीव वैज्ञानिक रूप से निर्धारित माना जाता है। इसलिए नारीवाद की राजनीतिक रूप से प्रभावित शाखाऐं बदलाव के लिए अलग–अलग रणनीतियों में विश्वास रखती हैं, क्योंकि महिला उत्पीड़न के कारणों के विषय में उनका दृष्टिकोण अलग–अलग है।''[1] नारीवाद की अवधारणा की शुरुआत उन्नीसवीं सदीं में यूरोप (पश्चिम) में होती है, सर्वप्रथम नारीवाद 'फेमेनिज्म' (Feminism) शब्द का प्रयोग प्रसिद्ध फ्रान्सीसी दार्शनिक और काल्पनिक समाजवादी विचारक 'चालर्स फूरियर' ने 1837 ई0 में किया था। लेकिन इससे भी पहले 1792 ई0 में 'मेरी वाल्टसन क्राट' की पुस्तक 'अविडिंकेशन आफ द राइट्स आफ वुमेन' को नारीवाद की पहली व्यवस्थित सैद्धान्तिक .ति माना जाता है। यही वह समय है जब 1789 ई0 में – फ्रान्सीसी क्राति हुई थी, निस्सन्देह नारीवाद या स्त्रियों के ऊपर इस क्रान्ति का प्रभाव पड़ा होगा। स्वतन्त्रता, समानता और भाईचारें पर आधारित फ्रान्सीसी क्रान्ति ने स्त्रियों को भी अपने हालात या स्थिति दोयम दर्जे की अधीनस्थ स्थिति को बदलने के लिए संघर्ष करने को प्रेरित किया होगा।***

कुंजीभूत शब्द– पितृसत्ता, सामाजिक, राजनीतिक, महिला उत्पीड़न, नारीवाद, विचारधारा, मताधिकार, परिवर्तनशील, विकसित।

नारीवाद के विकास के कई चरण हैं, सामान्यतः नारीवाद के विकास को कुछ खण्ड़ों/चरणों में बाँटकर समझा जा सकता है। वैसे तो संगठित रूप से नारीवादी आंदोलन उन्नीसवीं सदीं में शुरू होती है, लेकिन अठराहवीं सदीं के उत्तरार्ध से ही नारीवाद या स्त्रियों से सम्बन्धित अधिकारों, न्याय, तथा समानता, स्वत्रन्त्रता को व्यावहारिक और कानूनी आधार पर हासिल करने का प्रयास शुरू हो चुका था। नारीवाद के शुरुआती चरण को एक सैद्धान्तिक और वैचारिक आधार प्रदान करने में 'मेरी वाल्सटन क्राट' की ए विड़ीकेशन ऑफ राइटस ऑफ वुमन, (1792 ई0 में प्रकाशित), 'जान स्टुअर्ट मिल की द सब्जेक्शन आफ वुमन (1869 में प्रकाशित) जैसी पुस्तकों ने बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया। इनका प्रमुख उद्देश्य स्त्री–पुरुष के बीच समानता तथा इसको हासिल करने के लिए कानूनी या विधान में बदलाव के लिए संघर्ष व दबाव डालना। – ''1850 से लेकर 1920 तक चली इस लहर के तहत स्त्रियों ने निजी और सार्वजनिक दायरों में पितृसत्ता के वर्चस्व को चुनौती दी। उन्होंने वोट के अधिकार शिक्षा तथा रोजगार तक स्त्रियों की पहुँच, संपति पर वैधानिक अधिकार, विवाह और तलाक के अधिकार के लिए संघर्ष किया।''[2]

शुरुआत में नारीवाद स्त्रियों की शिक्षा, उनके रोजगार के अधिकार और वैवाहिक जीवन में आने वाली समस्याओं से मुक्ति हेतु वैधानिक/कानूनी सुरक्षा तक सीमित था। आगे चलकर उन्होंने अपने वोट या मतदान के अधिकार को हासिल करने के लिए आंदोलन और संघर्ष भी किया। – ''मताधिकार का अधिकार या वोट डालने के अधिकार का प्रश्न खास तौर पर तब उठा जब 'जान स्टुअर्ट मिल' ने 1867 के सुधार एक्ट में महिलाओं को भी शामिल करने का प्रयास किया।''[3] वोट के अधिकार को हासिल करने के लिए स्त्रियों को काफी लम्बा संघर्ष करना पड़ा। उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी के शुरुआत में वोट के अधिकार का मुद्दा तमाम नारीवादी संगठनों के लिए सबसे अहम बन गया था।

1903 में गठित 'वुमन सोशल एण्ड पब्लिक यूनियन' ने वोट के अधिकार को हासिल करने के लिए काफी जुझारू संघर्ष किया। अंततः वोट का अधिकार काफी लम्बे संघर्ष के बाद 1920 में अमेरिका में स्त्रियों को हासिल हुआ। यूरोप के देशों में तो यह अधिकार उन्हें और बाद में मिला। – ''स्त्रियों को मताधिकार दिलाना महिला आंदोलन के पहले चरण की सुप्रसिद्ध सफलता रही, लेकिन यह सफलता एक लम्बे राजनैतिक संघर्ष के कठिन परिश्रम से ही मिल सकी और वह भी बीसवीं सदी की शुरुआत के काफी बाद संयुक्त राज्य अमेरिका की संसद ने 1919 में महिलाओं को मताधिकार देने के लिए संविधान में संशोधन किया। ब्रिटेन में महिलाओं को मताधिकार 1927 में मिला, जबकि फ्रान्स की महिलाओं को इसके लिए 1944 तक इंतजार करना पड़ा।''[4] इस प्रकार 1848 से शुरु नारीवाद का संघर्ष अपने मुख्य उद्देश्य 'वोट के अधिकार' को हासिल करने में लगभग सौ वर्ष का समय लग गया और नारीवाद के पहले चरण का संघर्ष यहाँ आकर समाप्त होता है।

नारीवादी संघर्ष/आंदोलन के दूसरे चरण की शुरुआत 1960 के दशक से होती है। सामान्यतः नारीवाद का पहला चरण यदि स्त्रियों को वोट के अधिकार और सम्पति के अधिकार दिलाने के लिए संघर्षरत था, तो इसका दूसरा चरण स्त्रियों का अपने शरीर और

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

प्रजनन के अधिकार या अपनी योनिकता पर नियन्त्रण को लेकर था। नारीवाद के इस दूसरे चरण/लहर को गति और धारदार बनाने में उस समय की महत्वपूर्ण फ्रेंच दार्शनिक और लेखिका – 'सिमोन द बोउवार' की प्रसिद्ध रचना 'द सेकेण्ड सेक्स' का बेहद महत्वपूर्ण योगदान है। साथ ही 'सेट्टी फ्रीडन' की 'द फेमेनिन मिस्टीक' (1963 में प्रकाशित) रचना ने भी नारीवाद के इस दूसरे उभार को काफी, तेज गति दी। – "फ्रीडन के विचारों ने स्त्रियों की चेतना जागृति में महत्वपूर्ण – योगदान दिया। खासतौर से पारिवारिक जीवन में असंतुष्ट मध्यवर्गीय गृहिणियों ने उनके विचारों को हाथों–हाथ लिया।"[5]

वास्तव में, उन्होंने स्त्रियों को अपना स्वतंत्र अस्तित्व और व्यक्तित्व या अस्मिता को पाने के लिए अपनी पारंपरिक घरेलू भूमिका और रूढ़ छवि से खुद को मुक्त करने का आह्वान किया था।

नारीवाद के इस दूसरे लहर/चरण की सैद्धान्तिकी या विचारधारा को विकसित करने में अमरीका, फ्रांन्स और ब्रिटेन की भूमिका बहुत ज्यादा है। इस दूसरी लहर को आगे बढ़ाने में जूलिएट मिचेल, ऐन ओकली, केट मिलेट, सुलामिथ फायरस्टोन, रॉबिने मॉरगेन, जर्मन ग्रीयर आदि को महत्वपूर्ण माना जाता है। – "लेकिन इसकी सैद्धान्तिक प्रस्थापनाओं को सही अर्थों में 'सिमोन द बोउवार' ने अपनी 1949 की पुस्तक 'द सेकेण्ड सेक्स' के माध्यम से वाणी दी। इस कृति में सिमोन ने स्त्री को अन्य बना देने की – सांस्कृतिक परम्परा का विश्लेषण किया।

उन्होंने इस तथ्य का उद्घाटन किया कि – "स्त्री पैदा नही होती बल्कि बना दी जाती है।" सिमोन के विमर्श ने स्पष्ट किया कि समाज में स्त्री की स्थिति को महज जैविकीय, मनोवैज्ञानिक या आर्थिक कारण निर्धारित नहीं करते, बल्कि सभ्यता के समग्र विकास के दौरान ही स्त्री देह को – सृजित किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप नारीत्व की परिकल्पना निकली है।"[6] इसी विचार को और स्पष्ट करते हुए 'केट मिलेट' की 'सेक्सुअल पालिटिक्स' तथा 'फायरस्टोन की 'द डायलेक्टिक ऑफ सेक्स' जैसी सैद्धान्तिक रचनाओं ने काफी ज्यादा प्रभाव डाला। केट मिलेंट ने स्त्रियों की 'सेक्सुलेटी' की पितृसत्ता द्वारा नियन्त्रित किए जाने और स्वयं स्त्रियों द्वारा आत्मसात किए जाने की जटिलता को पहचानकर उससे मुक्त होने को स्त्रियों की अधीनस्थ/दोयम दर्जे की स्थित से मुक्ति या आजादी के लिए अनिवार्य माना है।

"सिमोन की तरह केट ने भी यह माना कि स्त्रियों ने नारीत्व के जिस विचार को आत्मसात कर रखा है, वही उनकी अधीनता का कारण है।"[7] आगे चलकर इस दौर की नारीवादी चिन्तकों ने यह माना कि उनके अधीनता या दोयम दर्जे का कारण व्यक्तिगत न होकर राजनीतिक है जिसकी जड़ें बहुत गहरी है और पितृसता का वर्चस्व इनके मूल में है। जिसको स्वयं स्त्रियों ने भी आत्मसात कर रखा है और बिना पितृसत्ता को चुनौती दिए वह अपनी आजादी और बराबरी को हासिल नहीं कर सकती है। यही वह समय है जब 'पर्सनल इज पोलिटिकल' जैसे नारों का प्रयोग नारीवादियों द्वारा किया जाने लगा। नारीवाद के इस दूसरे चरण को 'रेडिकल नारीवाद' के रूप में देखा जाता है।

स्त्रियों के लिए सौन्दर्य प्रतियोगिता जैसे आयोजनों का विरोध इन्हीं रेडिकल नारवादियों द्वारा किया गया। – "जुलिएट मिचेल ने अपने आलेख' वन्स अ फेमेनिस्टः स्टोरीज ऑफ जेनेरशन' में लिखा हैः हमने यह शिद्दत से महसूस किया कि हम सभी एक ही लक्ष्य के लिए लड़ रहे थे इसलिए हमारा नारीवाद भी एक हो सकता था और स्त्री मुक्ति का सपना भी एक ही रास्ते पर चलते हुए पाया जा सकता था। – समान वेतन, समान शिक्षा एवं रोजगार के अवसर, 24 घंटें नर्सरी, मुत गर्भनिरोधक और मुत गर्भपात का अधिकार।"[8] निहसन्देह नारीवाद के इस चरण में अपने संघर्षो और आंदोलनों के बल पर स्त्रियों को अपनी आजादी और समानता के लक्ष्यों को हासिल करने में कामयाबी मिली, साथ ही स्त्रियों की समस्याओं, उनके सामाजिक, राजनीतिक धार्मिक आदि अनेक अधिकारों और पितृसत्ता के विभिन्न रूपों को समझने तथा उनकी जकड़ से मुक्त होने की बारीकियों को समझने के लिए अमरीका, ब्रिटेन फ्रांस आदि देशों के विश्वविद्यालयों और अकादमिक जगत में 'स्त्री अध्ययन' (वुमन स्टडीज) जैसे विषयों को पाठयक्रम में शामिल किया गया, जिनका कि अगले चरण के नारीवादी आन्दोलन संघर्ष को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका रही।

1970 के दशक में एक बड़ा ही दिलचस्प और अनोखा आंदोलन और मुहिम यूरोप के कुछ प्रमुख देशों में देखने को मिला। यह मुहिम या अभियान 'स्त्रियों के घरेलू काम के लिए वेतन' की मांग के साथ शुरू हुआ। – "इस मुददें को उठाने का उद्देश्य था कि समाज को यह मानने के लिए मजबूर किया जाए कि महिलाओं द्वारा घर पर किया गया काम – जिसमें घर सम्भालना, बच्चों की देखभाल करना इत्यादि काम शामिल हैं। समाज की पुनरुत्पत्ति के लिए निर्णायक हैं, फिर भी उसे आर्थिक रूप से मूल्यहीन माना जाता है। समाज यह पहले से ही मानकर चलता है कि महिलाओं का घरेलू काम 'मुत' या 'अवैतनिक' काम है।"[9]

नारीवाद के तीसरें चरण/लहर की शुरुआत बीसवीं सदी के अंतिम दशक (नब्बें का दशक) से मानी जाती है। इनमें अलग–अलग नस्ल और वर्ग की महिलाओं की भागीदारी के कारण यह आंदोलन अपने आकार में काफी व्यापक हो चुका था। 'रेबेका वाकर' और 'शैनन लिस' को इस तीसरे चरण के नारीवाद को शुरू करने का श्रेय दिया जाता है।

नारीवाद के इस तीसरे चरण मे अश्वेत स्त्रियों की सैद्धान्तिकी और वैचारिकी का प्रभाव स्पष्ट रूप मे दिखाई देता है। इसी समय 'नाओमी वुल्फ' की प्रसिद्ध रचना 'द ब्यूटी मिथ' 1990 में प्रकाशित होकर आता है। – "इस किताब में वुल्फ ने नारीवाद के स्थापित तर्कों का सहारा लेकर साबित किया था कि समाज और संस्कृति को नारी–सौन्दर्य के असम्भव जैसे मानक हासिल करने के लिए मजबूर करते हैं, जिनमें फंस कर वह खुदको खपा बैठती है।"[10] नारीवाद का तीसरा चरण 2010 तक माना जाता है, नारीवाद के चौथें चरण/लहर की शुरुआत 2010 से मानी जाती है, जो अभी भी जारी है। इसमें डिजिटल माध्यम से स्त्रियों ने अपने लिए जगह बनाई है। इस दौरान डिजिटल क्रान्ति ने समाज के भीतर जबरदस्त परिवर्तन लाया है। इन माध्यमों का उपयोग स्त्रियों नें अपने आप को अभिव्यक्त करने और सशक्त बनाने का भरपूर प्रयास किया है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. रे, सुराजिन्ता, नारीवादी सिद्धान्तः एक तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य, नारीवादी राजनीति : संघर्ष एवं मुद्दें, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, पुनर्मुद्रण 2006, पृष्ठ सं0–49।
2. पाठक, सुप्रिया, नारीवाद की पहली लहर, समाज विज्ञान विश्वकोश, संपादक अभय कुमार दुबे, राजकमल प्रकाशन 2016 संस्करण, पृष्ठ सं0 785।
3. वही ,, ,, ,, पृष्ठ सं0 785।
4. जॉन, मैरी, पश्चिम में समकालीन महिला आंदोलन, नारीवादी राजनीति : संघर्ष व मुद्दे हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, पुनर्मुद्रण 2006, पृष्ठ सं0 107।
5. पाठक, सुप्रिया, नारीवाद की दूसरी लहर, समाज विज्ञान विश्वकोश, संपादक अभयकुमार दुबे, राजकदक प्रशन, 2016 संस्करण, पृष्ठ सं0 787।
6. वही ,, ,, ,, पृष्ठ सं0 787।
7. वही ,, ,, ,, पृष्ठ सं0 788।
8. वही ,, ,, ,, पृष्ठ सं0 789।
9. जॉन, मैरी, पश्चिम में समकालीन महिला आंदोलन, नारीवादी राजनीति : संघर्ष व मुद्दें हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, पुनर्मुद्रण 2006, पृष्ठ सं0 115।
10. पाठक, सुप्रिया, नारीवाद की तीसरी लहर, समाज विज्ञान विश्वकोश, संपादक अभय कुमार दुबे, राजकमल प्रकाशन 2016 संस्करण, पृष्ठ सं0 790।

*****